Toppersnotes®
Unleash the topper in you

HARYANA - CET

संयुक्त योग्यता परीक्षा

हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग

भाग – 3

हिन्दी एवं अंग्रेजी

SIERRA INNOVATIONS

HARYANA - CET

CONTENT

हिन्दी		
1.	वर्ण विचार	1
2.	शब्दकोश (शब्द क्रम निर्धारण)	4
3.	तत्सम – तद्भव	7
4.	देशज शब्द	9
5.	उपसर्ग	11
6.	प्रत्यय	14
7.	संधि	18
8.	समास	35
9.	संज्ञा	44
10.	सर्वनाम	49
11.	विशेषण	51
12.	क्रिया	52
13.	हिन्दी भाषा में शब्दों का मानकीकरण	54
14.	वाक्य रचना	57
15.	वर्तनी शुद्धि	61
16.	वाक्य–शुद्धि	65
17.	शुद्ध वाक्य	68
18.	पर्यायवाची	75
19.	विलोम शब्द	78
20.	वाक्य के लिए एक शब्द	86
21.	शब्द युग्म	92
22.	एकार्थी शब्द	103
23.	मुहावरे	110
24.	लोकोक्ति	120

English

1.	Noun	134
2.	Pronoun	143
3.	Adjective	152
4.	Verb	160
5.	Adverb	169
6.	Conjunction	180
7.	Preposition	188
8.	Articles	210
9.	Time and Tense	219
10.	Voice	225
11.	Narration	234
12.	Question Tags	246
13.	Idioms & Phrases	253
14.	Antonyms & Synonyms	266
15.	Spelling Correction	284
16.	One Word Substitution	292
17.	Fill in the Blanks	318

हिन्दी

संधि

संधि का अर्थ–मिलान

संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

  जैसे –

  प्रत्येक – प्रति + एक
  विद्यालय – विद्या + आलय
  जगदीश – जगत + ईश
  आशीर्वाद – आशीः + वाद

संधि का परिभाषा

कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास–पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते है।

किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास–पास आते हैं तो कभी–कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते है। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

जैसे–	वर्ण	+	मेल	=	संधि युक्त शब्द
	रमा	+	ईश	=	रमेश
	आ	+	ई	=	ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ। संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

जैसे–	शुभ	+	आगमन	–	शुभागमन
	सत्	+	आचरण	–	सदाचरण
	निः	+	ईश्वर	–	निरीश्वर

- संधि के तीन भेद होते है–
  1. स्वर संधि
  2. व्यंजन संधि
  3. विसर्ग संधि

1. **स्वर संधि**

   स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होनें को ही स्वर संधि कहा जाता है।

   जैसे– विद्यार्थी – विद्या + अर्थी

स्वर संधि के मुख्यतः पाँच भेद होते है–

(i) दीर्घ संधि
(ii) गुण संधि
(iii) वृद्धि संधि
(iv) यण संधि
(v) अयादि संधि

(i) दीर्घ संधि

- इस संधि में दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते है।
- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ के बाद वे ही लघु या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ, ऋ हो जाते हैं।

(अ + अ = आ)

1. परमार्थ – परम + अर्थ

अ + आ = आ

2. कार्य + आलय = कार्यालय

(आ + अ = आ)

3. परीक्षार्थी = परीक्षा + अर्थी

(आ + आ = आ)

4. महाशय = महा + आशय

(इ + इ = ई)

रवि + इन्द्र = रवीन्द्र

(ई + इ = ई)

शची + इन्द्र = शचीन्द्र

(इ + ई = ई)

अभि + ईप्सा = अभीप्सा

इ + ई = ई

(ई	+	ई	= ई)		(उ	+	उ	=	ऊ)
नदी	+	ईश	= नदीश		भानु	+	उदय	=	भानूदय
(उ	+	ऊ	= ऊ)		(ऊ	+	उ	=	ऊ)
लघु	+	ऊर्मि	= लघूर्मि		वधू	+	उल्लास	=	वधूल्लास
(ऊ	+	ऊ	= ऊ)		ऋ	+	ऋ	=	ॠ
वधू	+	ऊर्मि	= वधूर्मि		पितृ	+	ऋण	=	पितृण

दीर्घ संधि के उदाहरण

1. अन्नाभाव – अन्न + अभाव
2. भोजनालय – भोजन + आलय
3. विद्यार्थी – विद्या + अर्थी
4. महात्मा – महा + आत्मा
5. गिरीन्द्र – गिरि + इन्द्र
6. महीन्द्र – मही + इन्द्र
7. गिरीश – गिरि + ईश

8. रजनीश – रजनी + ईश
9. भानूदय – भानु + उदय
10. वधूत्सव – वधू + उत्सव
11. रामावतार – राम + अवतार
12. सत्यार्थी – सत्य + अर्थी
13. रामायण – राम + अयन
14. धर्माधर्म – धर्म + अधर्म
15. पराधीन – पर + अधीन
16. पुण्डरीकाक्ष – पुण्डरिक + अक्ष
17. दैत्यारि – दैत्य + अरि
18. शताब्दी – शत + अब्दी
19. धर्मार्थ – धर्म + अर्थ
20. मुरारि – मुर + अरि
21. नीलाम्बर – नील + अम्बर
22. परमार्थ – परम + अर्थ
23. रूद्राक्ष – रुद्र + अक्ष
24. स्वाधीन – स्व + अधीन
25. गीताजंली – गीत + अंजली
26. दीपावली – दीप + अवली
27. प्रार्थी – प्र + अर्थी
28. छिद्रन्वेषी – छिद्र + अन्वेषी
29. मूल्यांकन – मूल्य + अंकन
30. अन्त्याक्षरी – अंत्य + अक्षरी
31. सापेक्ष – स + अपेक्ष
32. अभयारण्य – अभय + अरण्य
33. सत्यार्थी – सत्य + अर्थी
34. नारायण – नार + अयन
35. परमात्मा – परम + आत्मा
36. पदावलि – पद + अवलि
37. रत्नाकर – रत्न + आकर
38. निगमागमन – निगम + आगमन
39. पद्माकर – पद्म + आकर
40. शरणागत – शरण + आगत
41. सत्याग्रह – सत्य + आग्रह
42. विद्याध्ययन – विद्या + अध्ययन
43. परीक्षार्थी – परीक्षा + अर्थी
44. रेखांकित – रेखा + अंकित
45. मुक्तावली – मुक्ता + अवली
46. दावानल – दावा + अनल
47. तथापि – तथा + अपि
48. महाशय – महा + आशय
49. द्राक्षासव – द्राक्षा + आसव
50. विद्यालय – विद्या + आलय
51. महात्मा – महा + आत्मा
52. प्रेरणास्पद – प्रेरणा + आस्पद
53. कवीन्द्र – कवि + इन्द्र

54. अतिव – अति + इव
55. अभीष्ट – अभि + इष्ट
56. अतीत – अति + इत
57. महीन्द्र – मही + इन्द्र
58. महतीच्छा – महती + इच्छा
59. कपीश – कपि + ईश
60. प्रतीक्षा – प्रति + ईक्षा
61. अधीक्षण – अधि + इक्षण
62. अभीप्सा – अभि + इप्सा
63. नारीश्वर – नारी + ईश्वर
64. सतीश – सती + ईश
65. लघूत्तम – लघु + उत्तम
66. सूक्ति – सु + उक्ति
67. अनूदित – अनु + उदित
68. गुरूपदेश – गुरु + उपदेश
69. भानूदय – भानु + उदय
70. सिंधूर्मि – सिंधु + ऊर्मि
71. भानूर्जा – भानु + ऊर्जा
72. वधूत्सव – वधू + उत्सव
73. चमूत्तम – चमू + उत्तम
74. मातृण – मातृ + ऋण
75. होतृकार – होतृ + ऋकार

(ii) गुण संधि

- जब अ, आ के बाद इ, ई आए तब दोनों मिलकर 'ए' हो जाते है।
  जैसे– देवेन्द्र – देव + इन्द्र
- अ, आ के बाद उ, ऊ आए तो दोनों मिलकर ओ हो जाते हैं।
  जैसे– वीरोचित – वीर + उचित
- अ, आ के बाद ऋ, ॠ आए तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं।
  जैसे–महर्षि–महा + ऋषि

उदाहरण

1. गणेश – गण + ईश
2. यथेष्ट – यथा + इष्ट
3. रमेश – रमा + ईश
4. जलोर्मि – जल + ऊर्मि
5. गंगोर्मी – गंगा + ऊर्मि
6. कण्वर्षि – कण्व + ऋषि
7. शुभेच्छा – शुभ + इच्छा
8. नरेश – नर + ईश
9. जलोष्मा – जल + ऊष्मा
10. सप्तर्षि – सप्त + ऋषि
11. नरेन्द्र – नर + इन्द्र
12. भारतेन्दु – भारत + इन्दु
13. मृगेन्द्र – मृग + इन्द्र
14. स्वेच्छा – स्व + इच्छा

15. देवेन्द्र	–	देव + इन्द्र
16. प्रेषिती	–	प्र + ईषिती
17. इतरेतर	–	इतर + इतर
18. अंत्येष्टि	–	अन्त्य + इष्टि
19. नृपेन्द्र	–	नृप + इन्द्र
20. महेन्द्र	–	महा + इन्द्र
21. अपेक्षा	–	अप + ईक्षा
22. प्रेक्षक	–	प्र + ईक्षक
23. राकेश	–	राका + ईश
24. गुड़ाकेश	–	गुड़ाका + ईश
25. सूर्योदय	–	सूर्य + उदय
26. सोदाहरण	–	स + उदाहरण
27. आद्योपान्त	–	आद्य + उपान्त
28. प्राप्तोदक	–	प्राप्त + उदक
29. जन्मोत्सव	–	जन्म + उत्सव
30. अन्योक्ति	–	अन्य + उक्ति
31. नीलोत्पल	–	नील + उत्पल
32. परोपकार	–	पर + उपकार
33. सर्वोदय	–	सर्व + उदय
34. अन्त्योदय	–	अन्त्य + उदय
35. महोदय	–	महा + उदय
36. महोत्सव	–	महा + उत्सव
37. जलोर्मि	–	जल + ऊर्मि
38. जलोष्मा	–	जल + ऊष्मा
39. देवर्षि	–	देव + ऋषि
40. हेमन्तर्तु	–	हेमन्त + ऋतु
41. शीतर्तु	–	शीत + ऋतु
42. शिशिरर्तु	–	शिशिर + ऋतु
43. उत्तमर्ण	–	उत्तम + ऋण
44. अधमर्ण	–	अधम + ऋण
45. राजर्षि	–	राज + ऋषि
46. महर्ण	–	महा + ऋण
47. महर्तु	–	महा + ऋतु
48. तवल्कार	–	तल + लृकार

नोट

- स्वर संधि में अगर 'प्र' के बाद ऊढ़/ऊढ़ा, ऊढ़ी आ जाए तो वहाँ गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे– प्रौढ़–प्र + ऊढ़
- 'अक्ष' शब्द के बाद अगर 'ऊहिनी' शब्द आ जाए तो वहाँ भी गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे– अक्षौहिणी–अक्ष + ऊहिनी

(iii) वृद्धि संधि

- अ, आ के बाद ए, ऐ आनें पर दोनों मिलकर ऐ हो जाता है।
  जैसे– एकैक – एक+एक
- अ, आ के बाद ओ, औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाता है।
  जैसे– महौषधि – महा + औषधि

उदाहरण

1. परमैश्वर्य – परम + ऐश्वर्य
2. सदैव – सदा + एव
3. महैश्वर्य – महा + ऐश्वर्य
4. परमौज – परम + ओज
5. महौजस्वी – महा + ओजस्वी
6. वनौषध – वन + औषध
7. महौषध – महा + औषध
8. लोकैषणा – लोक + एषणा
9. हितैषी – हित + एषी
10. तथैव – तथा + एव
11. वसुधैव – वसुधा + एव
12. सदैव – सदा + एव
13. मतैक्य – मत + ऐक्य
14. विचारैक्य – विचार + ऐक्य
15. गंगौक – गंगा + ओक
16. महौज – महा + ओज
17. जलौषधि – जल + औषधि
18. परमौत्सुक्य – परम + औत्सुक्य
19. देवौदार्य – देव + औदार्य
20. विश्वैक्य – विश्व + ऐक्य
21. स्वैच्छिक – स्व + ऐच्छिक

(iv) यण संधि

- यदि इ या ई, उ या ऊ, तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो–
  इ, ई का य, उ, ऊ का व, ऋ का र हो जाता है, साथ ही बाद वाले शब्द के पहले स्वर की मात्रा य, व, र में लग जाती है।

उदाहरण

1. अत्यधिक – अति + अधिक
2. इत्यादि – इति + आदि
3. नद्यागम – नदी + आगम
4. अत्युत्तम – अति + उत्तम
5. अत्यूष्म – अति + उष्म
6. प्रत्येक – प्रति + एक
7. स्वच्छ – सु + अच्छ
8. स्वागत – सु + आगत
9. अन्वेषण – अनु + एषण
10. अन्विति – अनु + इति
11. पित्राज्ञा – पितृ + आज्ञा
12. अत्यल्प – अति + अल्प
13. व्यसन – वि + असन
14. अध्यक्ष – अधि + अक्ष
15. पर्यंक – परि + अंक
16. अभ्यर्थी – अभि + अर्थी
17. अभ्यंतर – अभि + अंतर
18. व्यय – वि + अय
19. पर्यवेक्षक – परि + अवेक्षक
20. व्यर्थ – वि + अर्थ
21. अत्यन्त – अति + अन्त

Toppersnotes
Unleash the topper in you

22. प्रत्यक्ष – प्रति + अक्ष
23. रीत्यनुसार – रीति + अनुसार
24. व्यवहार – वि + अवहार
25. न्यसत – नि + अस्त
26. अध्ययन – अधि + अयन
27. प्रत्यय – प्रति + अय
28. गत्यवरोध – गति + अवरोध
29. गत्यनुसार – गति + अनुसार
30. व्यष्टि – वि + अष्टि
31. प्रत्यर्पण – प्रति + अर्पण
32. अभ्यागत – अभि + आगत
33. प्रत्याशा – प्रति + आशा
34. अत्याचार – अति + आचार
35. व्याकुल – वि + आकुल
36. अभ्यास – अभि + आस
37. अत्यावश्यक – अति + आवश्यक
38. व्यापक – वि + आपक
39. पर्याप्त – परि + आप्त
40. पर्यावरण – परि + आवरण
41. अध्यादेश – अधि + आदेश
42. व्यास – वि + आस
43. व्याप्त – वि + आप्त
44. न्याय – नि + आय
45. व्याकरण – वि + आकरण
46. व्यायाम – वि + आयाम
47. व्याधि – वि + आधि
48. प्रत्यारोपण – प्रति + आरोपण
49. अभ्युदय – अभि + उदय
50. प्रत्युत्तर – प्रति + उत्तर
51. उपर्युक्त – उपरि + उक्त
52. प्रत्युपकार – प्रति + उपकार
53. न्यून – नि + ऊन
54. अत्यैश्वर्य – अति + ऐश्वर्य
55. देव्यपर्ण – देवी + अर्पण
56. नद्यपर्ण – नदी + अर्पण
57. देव्यागमन – देवी + आगमन
58. नार्युचित – नारी + उचित
59. स्त्र्युचित – स्त्री + उचित
60. स्त्र्युपयोगी – स्त्री + उपयोगी
61. नद्युर्मि – नदी + ऊर्मि
62. अत्यौचित्य – अति + औचित्य
63. स्वल्प – सु + अल्प
64. मन्वन्तर – मनु + अन्तर
65. स्वच्छ – सु + अच्छ
66. मध्वरि – मधु + अरि
67. तन्वंगी – तनु + अंगि
68. स्वस्ति – सु + अस्ति
69. गुर्वादेश – गुरु + आदेश
70. गुर्वाज्ञा – गुरु + आज्ञा

71. वध्वागमन – वधू + आगमन
72. अन्विति – अनु + इति
73. अन्वीक्षण – अनु + ईक्षण
74. अन्वीक्षा – अनु + ईक्षा
75. गुर्वैदार्य – गुरु + औदार्य
76. पित्रनुमति – पितृ + अनुमति
77. मात्राज्ञा – मातृ + आज्ञा
78. पित्रादेश – पितृ + आदेश
79. वक्त्रुद्बोधन – वक्तृ + उद्बोधन
80. लाकृति – लृ + आकृति
81. सुध्युपास्य – सुधी + उपास्य
82. त्र्यम्बकम – त्रि + अम्बकम
83. स्वस्त्ययन – स्वस्ति + अयन

(v) अयादि संधि

- यदि 'ए' या 'ऐ' 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'ए' का अय्, ऐ का आय् हो जाता है।
  जैसे– नयन – ने + अन
  नायक – नै + अक
- ओ का अव, औ का आव हो जाता है।
  जैसे– पवन–पो + अन
  पावक–पौ + अक

उदाहरण

1. भवन – भो + अन
2. संचय – संचे + अ
3. शयन – शे + अन
4. नय – ने + अ
5. विजयिनी – विजे + इनी
6. विनायक – विनै + अक
7. विधायिका – विद्यै + इका
8. पायक – पै + अक
9. गायक – गै + अक
10. विधायक – विधै + अक
11. सायक – सै + अक
12. हवन – हो + अन
13. गवीश – गो + ईश
14. श्रवण – श्रो + अन
15. विभव – विभो + अ
16. भविष्य – भो + इष्य
17. पवित्र – पो + इत्र
18. वटवृक्ष – वटो + वृक्ष
19. श्रावक – श्रौ + अक
20. धाविका – धौ + इका

नोट – कुछ शब्द ऐसे होते है जिसमें एक से अधिक संधि भी होती है।
गवेन्द्र– गो + इन्द्र – अयादि
गव + इन्द्र – गुण
गवाक्ष – गो + अक्ष – अयादि
गव + अक्ष – गुण

कुछ इतिहासकारों नें स्वर संधि के अन्य रूपों को भी स्वीकार किया है जो निम्न है–

पररूप संधि

यदि किसी शब्द के अन्त में अ, आ के बाद ए, ओ में से कोई एक वर्ण हो तो पदान्त अ, आ का पररूप एकादेश हो जाता है।

जैसे –

दन्तोष्ठ – दन्त + ओष्ठ
शुद्धोदन – शुद्ध + ओदन
अधरोष्ठ – अधर + ओष्ठ
बिम्बोष्ठ – बिम्ब + ओष्ठ

पूर्व रूप

यदि पद के अन्त में ए, ओ के बाद ह्रस्व 'अ' हो तो अ का पूर्व एकादेश हो जायेगा तथा विकल्प से 'अ' के लुप्त पद स्थान पर अवग्रह 'अ' (ऽ) हो जायेगा।

जैसे –

मनोऽभिलाषा/मनोभिलाषा – मनो + अभिलाषा
यशोऽधिकार/यशोधिकार – यशो + अधिकार
मनोऽभिमान/मनोभिमान – मनो + अभिमान
सोऽपि/सोपि – सो + अपि

स्वर संधि के विशेष नियम

- यदि पदान्त अ के परे अ हो तो विकल्प से अ + अ = अ हो जाता है।

  जैसे –

  पतंजलि – पतत् + अंजलि
  कुलटा – कुल + अटा
  अपंग – अप + अंग
  सारंग – सार + अंग
  सीमत – सीम + अन्त
  मार्तण्ड – मार्त + अंड
  कर्कन्धु – कर्क + अंधु
  मनीषा – मनस् + ईषा

- जिन शब्दों के अन्त में अक्ष व रात्र पद लिखा हो तो संधि विच्छेद करते समय अक्ष का अक्षि, रात्र का रात्रि हो जाता है।

  जैसे –

  प्रत्यक्ष – प्रति + अक्षि
  सहस्त्राक्ष – सहस्त्र + अक्षि
  नवरात्र – नव + रात्रि

2. व्यंजन संधि

व्यंजन संधि में एक व्यंजन का किसी दूसरे व्यंजन से अथवा स्वर से मेल होने पर दोनों मिलने वाली ध्वनियों में विकार उत्पन्न हो जाता है। इस विकार से होने वाली संधि को व्यंजन संधि कहते है।

जैसे – व्यंजन + व्यंजन – व्यंजन
व्यंजन + स्वर – व्यंजन

व्यंजन संधि के प्रमुख नियम निम्नलिखित है–

- यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात् क, च, ट, त, प के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण आए या य, र, ल, व या कोई स्वर आए तो क, च, ट, त, प के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण अर्थात् ग, ज, ड, द, ब हो जाता है।

जैसे

1.	वागीश	–	वाक् + ईश
2.	दिग्गज	–	दिक् + गज
3.	वाग्दान	–	वाक् + दान
4.	सद्वाणी	–	सत् + वाणी
5.	अजंत	–	अच् + अन्त
6.	अबिंधन	–	अप् + इंधन
7.	तद्रूप	–	तत् + रूप
8.	जगदानन्द	–	जगत् + आन्नद
9.	शब्द	–	शप् + द
10.	जगदीश	–	जगत् + ईश
11.	अब्ज	–	अप् + ज
12.	प्रागैतिहासिक	–	प्राक् + ऐतिहासिक
13.	वाग्जाल	–	वाक् + जाल
14.	सद्गति	–	सत् + गति
15.	दिग्विजय	–	दिक् + विजय
16.	षडानन	–	षट् + आनन
17.	ऋगवेद	–	ऋक् + वेद
18.	उद्घोष	–	उत् + घोष
19.	सुबन्त	–	सुप् + अन्त
20.	वागीश्वरी	–	वाक् + ईश्वरी
21.	चिदानन्द	–	चित् + आन्नद
22.	सदाचार	–	सत् + आचार
23.	षड्दर्शन	–	षट् + दर्शन
24.	वाग्दत्ता	–	वाक् + दत्ता
25.	दिगम्बर	–	दिक् + अम्बर
26.	सद्वाणी	–	सत् + वाणी
27.	उद्दंड	–	उत् + दंड
28.	उद्धृत	–	उत् + धृत
29.	सदानन्द	–	सत् + आन्नद
30.	जगदम्बा	–	जगत् + अम्बा
31.	वाग्हरि/वाग्धरी	–	वाक् + हरि
32.	वृहदारण्यक	–	वृहत् + आरण्यक
33.	सदुपयोग	–	सत् + उपयोग
34.	सच्चिदानन्द	–	सत् + चित् + आन्नद
			सच्चित् + आन्नद

- त्, थ्, द्, ध्, न्, स्
  ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ का नियम
  च् छ् ज् झ् ञ् श्

  जैसे –

रामश्शेते	–	रामस् + शेते
सच्चित	–	सत् + चित
शरच्चन्द्र	–	शरत् + चन्द्र
सच्चरित्र	–	सत् + चरित्र

English

Toppersnotes
Unleash the topper in you

Verb

- Verb वह शब्द है, जिससे किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है ।
- **Types of Verb**
  1. Transitive verb (सकर्मक क्रिया)
  2. Intransitive verb (अकर्मक क्रिया)

1. Transitive Verb :- वह verb है, जो object के संदर्भ में अपना अर्थ प्रकट करती है ।

Eg.:- I opened the gate.
The man killed a snake.
Aditi made a doll.

2. Intransitive verb :- वह verb है, जो अपना अर्थ प्रकट करने के लिए object का सहारा नहीं लेती है ।

Eg.:- The man died(v).
The girl smiled (v).
The sun Shines (v).

Some Important facts of verb

1. कुछ ऐसे Transitive Verb है जो कभी-कभी Intransitive verb की तरह प्रयुक्त होते है ।

Transitive	**Intransitive**
She eats bread.	We eat to live.
The boy broke the glass.	The glass broke.
He opened the door.	The door soon opened.

2. जब कोई Intransitive verb, preposition के साथ जुडता है तो वह Transitive बन जाता है ।

Eg.:- He laughed at me.
We take about the affair.
I carried out his orders.

- Verb को पुनः उपयोग के आधार पर दो भागों में बांटा जा सकता है –

Verb
- Main verb
- Auxiliary verb (Helping Verb)
  - Primary Auxiliary verb
  - Modal Auxiliary verb
  - Marginal Auxiliary verb

1. Main Verb: - वह verb होती है, जो sentence में Main Verb के रूप में प्रयुक्त होती है। ये verb V_1, V_2, V_3, V_4, V_5 के रूप में प्रयुक्त होती है।

Eg.:- I write a letter. [Write - V_1]

He wrote a letter. [Wrote – V_2]

He is written a letter. [Written – V_3]

He is writing a letter. [Writing – V_4 (V_1+ing)]

He writes a letter. [Writes – V_5 (V_1 + s/es)]

Present (1st Form)	अर्थ	**Past (2nd Form)**	**P. Participle (3rd Form)**	**- ing Form**	**s/es Form**
Arise	उठना	arose	arisen	arising	arises
Awake	जागना	awoke	awaken	awaking	awakes
Be	होना	was, were	been	being	is/was
Bear	जन्म देना	bore	born	bearing	bears
Bear	सहन करना	bore	borne	bearing	bears
Become	बनना	became	become	becoming	becomes
Begin	आरंभ करना	began	begun	beginning	begins
Bite	दाँत से काटना	bit	bitten	biting	bites
Blow	हवा का चलना	blew	blown	blowing	blows
Bind	बाँधना	bound	bound	binding	binds
Bid	आज्ञा देना	bade	bidden	bidding	bids
Bid	बोली लगाना	bid	bid	bidding	bids
Break	तोड़ना	broke	broken	breaking	breaks
Choose	चुनना	chose	chosen	choosing	chooses
Cling	चिपटना	clung	clung	clinging	clings
Come	आना	came	come	coming	comes
Dig	खोदना	dug	dug	digging	digs
Do	करना	did	done	doing	does
Draw	खींचना	drew	drawn	drawing	draws
Drink	पीना	drank	drunk	drinking	drinks
Drive	चलाना	drove	driven	driving	drives
Eat	खाना	ate	eaten	eating	eats
Fall	गिरना	fell	fallen	falling	falls
Find	पाना	found	found	finding	finds
Fly	उड़ना, उड़ाना	flew	flown	flying	flies
Forbid	मना करना	forbade	forbidden	forbidding	forbids

Forget	भूल जाना	forgot	forgotten	forgetting	forgets
Freeze	जमाना/जमना	froze	frozen	freezing	freezes
Get	पाना	got	got	getting	gets
Give	देना	gave	given	giving	gives
Grind	पीसना	ground	ground	grinding	grinds
Grow	बढ़ना, उगना	grew	grown	growing	grows
Hang	लटकाना	hung	hung	hanging	hangs
Hide	छिपाना/छिपना	hid	hidden	hiding	hides
Hold	थामना	held	held	holding	holds
Know	जानना	knew	known	knowing	knows
Lie	लेटना	lay	lain	lying	lies
Ride	सवारी करना	rode	ridden	riding	rides
Ring	बजना/बजाना	rang	rung	ringing	rings
Rise	उठना/उगना	rose	risen	rising	rises
See	देखना	saw	seen	seeing	sees
Shake	हिलाना	shook	shaken	shaking	shakes
Shine	चमकना	shone	shone	shining	shines
Shoot	फोटो निकालना/गोली मारना	shot	shot	shooting	shoots
Shrink	सिकुड़ना	shrank	shrunk	shrinking	shrinks
Sing	गाना	sang	sung	singing	sings
Sink	डूबना	sank	sunk	sinking	sinks
Sit	बैठना	sat	sat	sitting	sits
Slay	वध करना	slew	slain	slaying	slays
Speak	बोलना	spoke	spoken	speaking	speaks
Spit	थूकना	spat	spat	spitting	spits
Stand	खड़ा होना	stood	stood	standing	stands
Steal	चुराना	stole	stolen	stealing	steals
Stick	चिपकना	stuck	stuck	sticking	sticks
Strike	चोट मारना/हड़ताल करना	struck	struck	striking	strikes
Swear	शपथ लेना	swore	sworn	swearing	swears
Swim	तैरना	swam	swum	swimming	swims
Swing	झूलना	swung	swung	swinging	swings

Take	लेना	took	taken	taking	takes
Tear	फाड़ना	tore	torn	tearing	tears
Wear	पहनना	wore	worn	wearing	wears
Weave	बुनना	wove	woven	weaving	weaves
Win	जीतना	won	won	winning	wins
Wind	चाबी लगाना	wound	wound	winding	winds
Write	लिखना	wrote	written	writing	writes
Wring	निचोड़ना	wrung	wrung	wringing	wrings

2. Auxiliary Verb :- वह verbs होती है, जो अन्य verb के साथ प्रयुक्त होकर Sentence को Interrogative तथा negative बनाती है तथा tense को बताने के साथ-साथ possibility तथा willingness को express करती है ।

(1) Primary Auxiliary Verbs :- Be, Do, Have.

(2) Modal Auxiliary Verbs :- Can, Could, may, might, shall, should, will, would, must, ought to.

(3) Marginal Auxiliary Verbs :- Used to, Need, Dare.

Some Rules for Auxiliary Verbs :-

1. Model Auxiliary Verb का प्रयोग Main Verb के रूप में नहीं होता है ।

Eg. :- You <u>can</u> (H.V.) help me.
It <u>may</u> (H.V.) rain today.

2. Be Verb का प्रयोग continuous tense में V_4 के पहले होता है ।

Eg. :- He is taking coffee.
I was playing cricket.

3. Do/ does/ did का प्रयोग simple present and simple past tense में negative sentence बनाने में होता है ।

Eg. :- He does not want to tell a lie.

4. Do का प्रयोग Imperative sentence को Negative/ Emphatic बनाने के लिए किया जाता है ।

Eg. :- Don't go there.
Do sing it again.

5. Is/ am/ are/ was/ were/ have/ has, had etc. के बाद infinitive का प्रयोग किया जाता है ।

Eg.:- I am to see her tomorrow.
I have to move the furniture myself.

6. Have + infinitive – Forced action के sense में–

Eg.:- I have to work hard.

She had to leave her job.

Use of Modal Auxiliary Verb

1. Can का प्रयोग

(i) Power, ability, capacity आदि के भाव में –

Eg.:- I can swim across the river.

You can speak English.

(ii) Permission के भाव में –

Eg.:- You can go now.

Can I see your diary?

(iii) Theoretical possibility (सैद्धांतिक संभावना) को व्यक्त करने में –

Eg.:- Everyone can make a mistake.

Electricity can be dangerous.

(iv) Friendly request करने वाले प्रश्नात्मक वाक्यों में –

Eg.:- Can I take your scooter?

2. Could का प्रयोग

(i) Past ability/ power/ capacity को व्यक्त करने में –

Eg.:- He could pass the board examination.

When I was young, I could outrun him.

(ii) Polite request/ permission के भाव में –

Eg.:- Could I smoke here?

Could I borrow your notebook for two days?

(iii) Remote possibility व्यक्त करने के लिए –

Eg.:- There could be a bomb under your seat.

3. May का प्रयोग

(i) संभावना/ अनिश्चितता के भाव को व्यक्त करने में –

Eg.:- It may rain tonight.

She may come late today.

(ii) अनुमति देने/ लेने के भाव में –

Eg.:- Q. May I use your mobile?

Ans. Yes, you may.

You may go now.

(iii) Wish/ pray/ bless/ curse को express optative sentence करने में –

Eg.:- May you live long !

May you succeed in life!

(iv) Principal clause Present Tense में हो तथा subordinate close that/ so that/ in order that ls प्रारंभ हो तो may का प्रयोग – (Purpose के संदर्भ में)

Eg.:- We eat so that we may live.

I work hard so that/in order that I may succeed

4. Might का प्रयोग

(i) Less possibility के भाव को व्यक्त करने में–

Eg.:- It might rain today. (न के बराबर संभावना)

She might come late.

(ii) Polite request/permission के भाव में–

Eg.:- Might I ask a questions?

You might make a little noise.

(iii) Suppositional sentence- I wish, we wish, he wishes, she wishes, as though, if only, suppose आदि के भाव व्यक्त करने वाले वाक्यों में–

Eg.:- If you worked hard, you might succeed.

I wish he might have seen, 'Mother India'.

5. Shall का प्रयोग

(i) I/we के साथ future की किसी घटना को व्यक्त करने में–

Eg.:- I shall go to Delhi tomorrow.

We shell go there tonight.

(ii) Suggestion को express करने वाले interrogative वाक्यों में–

Eg.:- Shall I open the gate?

Shall we talk to the headman?

(iii) Orders, Instructions तथा Speculations (अनुमानों) को express करने वाले – Interrogative Sentence में–

Eg.:- What shall I do for your children, Sir?

What shall I do in a month?

6. <u>Should</u> <u>का प्रयोग</u>

(i) नैतिक दायित्व (Moral obligation), कर्तव्य (duty) के भाव को express करने में –

Eg.:- We should not tell a lie.

You should come to school in time.

(ii) Suggestion तथा advice देने के भाव में –

Eg.:- You should study English.

You should not laugh at his mistakes.

(iii) less possibility को express करने वाले conditional clause में –

Eg.:- If he should come, ask him to wait for me.

(iv) Formal notice or instruction को express करने के लिए –

Eg.:- Candidates should answer all the questions.

Your applications should reach before 26th Jan. 2021.

(v) Unread situation को express करने वाले वाक्य के principal clause में polite advice or improvement के लिए –

Eg.:- If he were you, he should not do it.

If I were you, I should not cheat him.

7. Will का प्रयोग

(i) I, we के साथ determination, promise, threatening, willingness को express करने में –

Eg.:- I will not surrender before the judge.

I will kill him.

(ii) Invitation, request, instruction orders तथा inevitability आदि के भाव में –

Eg.:- Will you come to dinner?

Will you help me?

The poor will be poor.

8. <u>Would</u> <u>का प्रयोग</u>

(i) Preference (प्राथमिकता) या choice को व्यक्त करने के लिए –

Eg.:- He would rather die than stay.

He would as soon die as beg.

(ii) Police request, wish, probability, determination आदि को व्यक्त करने में –

Eg.:- Would you like to have a cup of tea? (Polite request)

Would that I were a bird. (Wish)

He would be a farmer. (Probability)

He would have his own way. (Determination)

(iii) Present या Past की कल्पना को व्यक्त करने में –

Eg.:- If I were a bird, I would fly in the sky.

(iv) Refusal (इंकार) के भाव को express करने में –

Eg.:- the machine wouldn't start.

9. Must का प्रयोग

(i) Compulsion को व्यक्त करने में –

Eg.:- Candidates must write in ink.

(ii) Duty (कर्तव्य) को व्यक्त करने में –

Eg.:- A soldier must fight for his country.

(iii) प्रबल संभावना (strong possibility) को express करने में –

Eg.:- He must be a robber.

He must be hungry after his long walk.

10. <u>Ought to</u> <u>का प्रयोग</u>

(i) Moral obligation या duty को व्यक्त करने के लिए –

Eg.:- We ought to love our county.

One ought not to abuse a beggar.

(ii) Logical Necessity (तार्किक आवश्यकता) को व्यक्त करने में –

Eg.:- Aditi ought not to be late.

Aditya ought to start at once.

(iii) Ought to + have + V_3 का प्रयोग past obligation को express करने में –

Eg.:- You ought to have seen the film.

You ought to have helped her.

11. Used to का प्रयोग

(i) Past habit/ situation को व्यक्त करने के लिए –

Eg.:- He used to study till 10 PM.

(ii) Verb + used to के बाद V_1 + ing का प्रयोग habitual action को दर्शाने के लिए होता है–

Eg.:- I am used to getting up late in the morning.

She is used to working in a noisy room.

12. Need का प्रयोग

(i) आवश्यकता होने या पढ़ने के अर्थ में –

Eg.:- He needs my help.

They need to do their homework.

(ii) Need not/ needn't के बाद infinitive with 'to' का प्रयोग नहीं होता है –

Eg.:- He need not go there.

I needn't help you.

(13) Dare का प्रयोग

(i) साहस करने या हिम्मत करने के अर्थ में –

Eg.:- He dares to go there.

They dare to come here.

(ii) चुनौती देने या ललकारने के अर्थ में हो तो इसके ठीक बाद object का use होगा।

Eg.:- He dared me to get success.

I dared him to win the match.